माई री, सहज जोरी प्रकट भई, जु रंग की गौर-स्याम घन-दामिनी जैसें।
प्रथम हू हुती, अब हू, आगें हू रहि है न टरि है तैसें॥
अंग अंग की उजराई सुघराई चतुराई सुंदरता ऐसें।
श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सम बैस वैसें॥

केलिमाल पद-गायन :

विदुषी उमा गर्ग
पूर्व विभागाध्यक्ष, संगीत एवं कला संकाय
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

ग्रन्थ-परिचर्चा विद्वत्मण्डल :

प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी
कुलाधिपति
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रो. इन्द्रनाथ चौधरी
पूर्व सदस्य सचिव तथा अकादमिक निदेशक
आईजीएनसीए
एवं पूर्व सचिव, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी
लोकगीत-मर्मज्ञ एवं भारतीय-विद्या-विशारद
प्रसिद्ध ब्रजभाषा साहित्यकार, हरियाणा

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

वेबसाईट : www.ignca.nic.in
सोशल-मीडिया सम्पर्क - फेसबुक : www.facebook.com/IGNCA ट्विटर : @ignca
ईमेल् - kalakosa.hod@gmail.com दूरभाष - 011-2338 8438

MINISTRY OF CULTURE · GOVERNMENT OF INDIA
सत्यमेव जयते
संस्कृति मंत्रालय · भारत सरकार

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

ग्रन्थ-विमोचन, परिचर्चा तथा 'रसोत्सव' चित्र-प्रदर्शनी

रसदेश

स्वामी श्री हरिदास विरचित केलिमाल तथा 'केलिमाल-मीमांसा'
केलिमाल के पदों पर अनुसन्धान-समीक्षात्मक टिप्पणियाँ

शुक्रवार 14 सितम्बर 2018 सायं 04:00 बजे

रसदेश

सौन्दर्यशास्त्र का वह अध्याय, जहाँ कला साधना से साध्य बन जाती है, जहाँ कला और कलाकार एकरूप और एकरस हो जाते हैं। यह रसदेश निरतिशय सौन्दर्य का देश है, जिस सौन्दर्य की छाया से सुन्दरतायें जन्म लेती हैं। सौन्दर्य की विराटता, अनन्तता, सम्पूर्णता और अनिर्वचनीयता। यह रसदेश भारत के ऐसे महान् संगीतज्ञ की चेतना-भूमि है, जिन्हें सम्राट् तानसेन का गुरु माना जाता है, जिन्हें गानकला गन्धर्व कहा गया था - स्वामी हरिदास। वृन्दावन की निकुञ्जों में निवास करते हुये स्वामी हरिदासजी अपनी धुन में ध्रुपद रचना करते एवं उनका गायन करते थे। ये संगीत रचनायें उनकी शिष्य परम्परा में आगे चलकर केलिमाल और सिद्धान्त के पद के रूप में सामने आईं। केलिमाल को वृन्दावन के रसिकों ने अपनी गुह्यनिधि के रूप में सँजोकर रखा। केलिमाल में संगीत के सिद्धान्त भी छिपे हुये हैं (प्रथम खण्ड)।

राग ही में रंग रह्यौ, रंग के समुद्र में ए दोउ झागे॥

केलिमाल-मीमांसा, गानकला गन्धर्व की चेतना भूमि, राग और रस के अभिन्न-सम्बन्ध की भूमि। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने जिस अनुसन्धान-पद्धति का विकास किया है, उसमें कला का अध्ययन जीवन की समग्रता में होता है। जीवन कहीं से भी विच्छिन्न नहीं है। एक तरह से उस सांस्कृतिक-परिवेश के सूत्रों का अध्ययन, सांस्कृतिक-तथ्यों का अध्ययन, जो व्यष्टि-जीवन और समष्टि जीवन के निरन्तर-प्रवाह में बहते रहे हैं। इस उपासना तत्त्व का स्रोत इस निरन्तर-प्रवाह से विच्छिन्न कैसे हो सकता है? इस अविच्छिन्नता के अध्ययन में ही अनुसन्धानकर्ता ने विचार किया है कि क्या कैवल्य, निर्वाण, मुक्ति, महासुख, आनन्द और रस की अवधारणओं के बीच कोई निरन्तरता है? (द्वितीय खण्ड)।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

ग्रन्थ-लोकार्पण समारोह तथा परिचर्चा में
आपको सादर आमन्त्रित करता है।

रसदेश

स्वामी श्री हरिदास विरचित केलिमाल तथा 'केलिमाल-मीमांसा'
केलिमाल के पदों पर अनुसन्धान-समीक्षात्मक टिप्पणियाँ

सम्पादक एवं अनुवादक
राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी

केलिमाल पद-गायन, परिचर्चा
एवं
'रसोत्सव' चित्र-प्रदर्शनी

शुक्रवार 14 सितम्बर 2018 सायं 04:00 बजे

चित्र-प्रदर्शनी दिनांक 14-21 सितम्बर, प्रातः 10:00 से सायं 05:00 बजे तक रहेगी।

स्थान
व्याख्यान कक्ष, 11 मानसिंह मार्ग, आई.जी.एन.सी.ए.
नई दिल्ली-110001

नजदीकी मेट्रो स्टेशन :
केन्द्रीय सचिवालय, गेट नं० 2

उत्तरापेक्षी - 011-23388438